पात्र

तारा चन्द

शिव राम

बृज नाथ

सरदारी लाल

बृन्दाबन, पूरण, सन्तू, रानी, राजो।

[पर्दा पडित ताराचंद की बैठक में खुलता है। यह बैठक नये और पुराने का अद्‌भुत मिलान उपस्थित करती है, क्योंकि इस में कौंच भी लगे हैं, तिपाइयाँ भी रखी हैं और एक तख्त पर गाव-तकिया भी लगा है।

बायीं दीवार में एक बडी खिडकी है, तख्त इसी के बराबर बिछा है। खिडकी पर पर्दा लटक रहा है, शायद पूरा नहीं खींचा गया, क्योंकि खिड़की का आधा भाग दिखायी दे रहा है, जिसके शीशों में से बाहर बाग़ीचे के पेड-पौधे दिखायी देते हैं।

दायीं दीवार में भी एक वैसी ही खिडकी है, जिसके अधखुले पर्दे से चबूतरा और उसके परे बाग़ीचा दिखायी देता है। खिडकी के इधर को एक दरवाजा है जो बाहर चबूतरे पर खुलता है। बाग़ से होकर बैठक में आने का यही दरवाजा है।

सामने की दीवार के दायें कोने में एक दरवाजा है जो आँगन में खुलता है। दरवाजे पर पर्दा लटक रहा है, किन्तु पर्दे के हटने पर आँगन और आँगन के परे बरामदे का एक भाग, पानी का नल और हौज साफ़ दिखायी देते हैं।

सामने दीवार के साथ कौच का सेट, तख्त से आँगन के दरवाजे तक, इस ढग से लगा है कि बायीं ओर के कौच पर बैठा हुआ व्यक्ति तख्त पर बैठे हुए आदमी से बडी सुगमता से बातचीत कर सकता है।

दीवारों पर अवतारों के चित्र भी लगे हैं और महात्मा गाँधी तथा पडित जवाहर लाल के भी, परन्तु उनमें मार्क्स और लैनिन के चित्र न जाने किसने लगा दिये है। सम्भवत पंडित जी के लडके पूरण ने लगाये है और पडित जी को कदाचित उसने यह कह दिया है कि ये भी अवतारों ही के चित्र हैं।

सुबह का समय है। खिडकी के शीशों से हलकी-हलकी धूप कमरे में आ रही है। पर्दा उठने पर पडित ताराचंद हुक्का पीते दिखायी देते हैं और शिवराम तख्त के बराबर ही कौच पर

आगे को झुके हुए बैठ रहे हैं। लगता है जैसे अभी आये हैं, क्योंकि टोपी अभी तक उनके हाथ में है, जिसे वे पर्दा उठते समय तख्त पर रखते दिखायी देते है ।

क्षण भर के लिए ताराचंद हुक्का गुडगुडाते हैं. फिर रानी को आवाज देते है ।]

ताराचंद : *रानी बेटा मैंने पानी लाने को कहा था।*

रानी : (आँगन से) *ला रही हूँ, पिता जी।*

शिवराम : *अरे भई, कोई ऐसी जल्दी नहीं। इतनी दूर से पैदल ही चला आया, इसलिए कुछ प्यास सी लग रही थी, पर ऐसी भी क्या मुसीबत है कि... ...*

(रानी आँगन के दरवाजे से पानी लिये प्रवेश करती है)

रानी : *लीजिए चचा जी !*

शिवराम : (गिलास लेते हुए) *जीती रहो बेटा !*

[दो एक घूँट पीकर गिलास तिपाई पर रख देते हैं। रानी गिलास उठाने लगती है ।]

नहीं, अभी गिलास ले जाने की ज़रूरत नहीं। मैं अभी और पीऊँगा। धीरे-धीरे पानी पीने का स्वभाव है मेरा।

ताराचंद : (हुक्का गुडगुडाते हुए) *सन्तू को भेज देना गिलास लेने। कहाँ है सन्तू ?*

रानी : *जी, सब्ज़ी-तरकारी लेने गया है मारकेट तक।*

ताराचंद : *जब आये, भेज देना।*

रानी : *जी, बहुत अच्छा।*

(चली जाती है)

शिवराम : *क्यों भई, रानी के विषय में क्या निश्चय किया है तुमने ? बेचारी आधी भी नहीं रही !*

ताराचंद : *रानो ही के दुख की दवा कर रहा हूँ शिवराम। अपनी ओर से मैं इस बात का पूरा पूरा ध्यान रखता हूँ कि उसे*

किसी प्रकार का कष्ट न हो (हुक्का गुड़गुड़ाते है) उसने दोबारा कालिज में दाख़िल होना चाहा और यद्यपि लड़कियों की शिक्षा को मै अधिक पसन्द नहीं करता, लेकिन पूरण के ज़ोर देने पर मैंने इसका प्रबन्ध कर दिया। उसने गाना सीखना चाहा और यद्यपि मैं नाच-गाने को, जैसा कि तुम जानते हो, डोम मीरासियों की चीज़ समझता हूँ पर पूरण के कहने पर, और इस बात का विचार करके कि रानी को अपना दुख हर समय खलेगा, मैंने सूरदास हरिराम को उसे गाना सिखाने के लिए लगा दिया (हुक्के का लम्बा कश लगा कर तनिक भेदभरे स्वर में) यही नहीं, मैंने अभी त्रिलोक का भी पीछा नहीं छोड़ा। बृन्दाबन को उसके पीछे लगा रखा है और वह उसे मनाने की पूरी चेष्टा कर रहा है (फिर हुक्का गुड़गुड़ाते और खाँसते हैं) मैं जानता हूँ अपनी सारी शिक्षा, कला और अपने समस्त गुणों के होते भी रानी विरह के इस लम्बे दुख को सहन न कर सकेगी।

शिवराम : धन चोरी हो जाय या खो जाय ताराचंद, मनुष्य संतोष से बैठ जाता है, किन्तु पास होते हुए भी, अपना होते हुए भी, उसे हाथ लगाने की आज्ञा न हो इस बात से जो कष्ट होता है, उसे मन ही जानता है।

ताराचद : ईश्वर तुम्हारा भला करे ! (हुक्के का लम्बा कश लगा कर) इसीलिए मैं इस जतन में हूँ कि त्रिलोक आकर उसे ले जाय।

शिवराम : क्या कहता है वह ?

ताराचद : अभी तक तो अपने हठ पर अड़ा है। वास्तव में बात यह है शिवराम कि इस विवाह से उसे बहुत आशाएँ थीं और जब उसने देखा कि उसकी आशाएँ उसकी कल्पना के अनुसार पूरी नहीं हुईं तो उसने इस बात का समस्त क्रोध बेचारी रानो पर निकाला।

शिवराम : आशाएँ ?

ताराचंद : उसे आशा थी कि दहेज़ में एक मकान और मोटर

अवश्य मिलेगी, किन्तु मकान छोड़ जब उसे मोटर भी न मिली.....

[पूरण बाहर चबूतरे पर दिखायी देता है। क्षण भर के लिए खिड़की में से भीतर झाँकता है, फिर ड्राइंग रूम की ओर आता है।]

शिवराम : उसे मकान और मोटर की क्या आवश्यकता है? उसके पिता के अपने मकान है और मोटर भी है।

ताराचंद : (हँस कर) किन्तु त्रिलोक के अतिरिक्त उसके पिता के पाँच और भी तो पुत्र हैं। बाँटने पर शायद किसी मकान की बैठक और मोटर का कोई पुर्ज़ा ही उसके हाथ लगे।

[पूरण कमरे में आता है किन्तु दोनों को बातों में निमग्न देखकर पल भर के लिए चौखट में खड़ा सुनता है।]

शिवराम : क्या कहते हो? उनके तो इतने मकान हैं!

ताराचंद : सब गिरवी रखे हुए हैं। हमें तो पता ही न चला, नहीं मैं कभी रानो का विवाह वहाँ न करता।

पूरण : (हँसता है) इस बात का पता चल जाता तो कोई और बात पर्दे में रह जाती। विवाह तो आज-कल अँधेरे में तीर मारने के समान है। निशाने पर लग गया तो लग गया, नहीं हाथ से निकला तीर तो वापस आता नहीं। जब दोनों पक्ष झूठ बोलने में एक दूसरे से बाजी ले जाने की चिन्ता में हों तो सच का पता पाना कठिन है।

ताराचंद : (हुक्का गुड़गुड़ाना छोड़ कर तीक्ष्ण कटु स्वर में) कहाँ से आये हो पूरण आवारागर्दी करते?

पूरण : आवारा-गर्दी में ठौर-ठिकाना कहाँ? सभी जगह घूमता आया हूँ।

ताराचंद : तुम्हें कभी तमीज़ से बात करनी भी आयेगी? (शिवराम से) और शिवराम, तुम कहा करते थे—बच्चों को जितना हो सके पढ़ाना चाहिए। ये महाशय एम० ए०

है और सुनता हूँ कि अपनी श्रेणी मे प्रथम रहे थे। पूछो क्या करते है ? (मुँह बना कर) आवारागर्दी।

पूरण : तो आखिर आप ही कहिए क्या करूँ ?

ताराचद . . (गर्ज कर) मै कहूँ ! मेरे कहने से क्या होता है ? (शिवराम से) मै इसके लिए कितने मित्रो के सामने बुरा नहीं बना शिवराम ! राय साहब ग़नीमत राय की सिफ़ारिश से बड़े दफ्तर मे नोकर कराया (नक्ल उतारते हुये) "मुझे यह क्लर्की पसन्द नहीं है।" बुरा-सा मुँह बना कर ये महाशय वहाँ त्यागपत्र दे आये। लाला गुलज़ारी लाल की मिन्नतें करके उनकी फर्म मे नौकर कराया, चार दिन बाद वहाँ से छोड़ आये। पूछा—'क्यों' ? उत्तर मिला—"दिन भर झूठ बोलना पडता है।" कोई पूछे, सत्यवादी हरिश्चन्द्र के अवतार तो बस तुम्ही हो, शेष सारी दुनिया झूठ बोलती है। सर सीताराम की मिल में मैनेजर की नौकरी दिलायी, सप्ताह भर से अधिक वहाँ न टिके। पूछा—'क्यों' ? पता चला—'मजदूरों पर अत्याचार इनसे सहन नही होता।' (फिर पूरण से) अब बताओ, तुम्हें और क्या करने को कहूँ ? सुबह कहाँ जाने को कहा था, कुछ याद है ?

पूरण : मैं उनसे बात करना भी अपना अपमान समझता हूँ।

ताराचंद . लाट है न भारत का तू (मुँह चिढाते हुए) बात करना भी अपमान समझता हूँ। बहिन का सारा जीवन संकट में है और ये महाशय उसके पति से बात तक करना अपमान समझते हैं।

पूरण मैं जानता हूँ, उनके साथ बहिन का जीवन.. .....

ताराचद : (और भी गर्ज कर) चुप रहो और अपनी यह फ़िलासफ़ी अपने पास रखो। बहुत सुन चुका हूँ।

रानी : (आँगन से) पूरण भय्या, तनिक इधर आना, यह ट्रंक ज़रा नीचे उतरवाना।

पूरण . आया रानो।

(चला जाता है)

ताराचद . ज़रूरत से ज्यादा शिक्षा ने लडके का दिमाग़ खराब कर दिया है (हुक्का गुडगुडाते है) मुझे कभी-कभी आशंका होती है कि यह अपने साथ रानो को भी न ले डूबे। स्त्री का स्थान उसके पति का घर है शिवराम, माता पिता के पास लड़की कितने दिन रह सकती है ?

शिवराम : बडे बडे राजा महराजा लड़कियों को अपने घर नही रख सकते ताराचंद, फिर हमारी-तुम्हारी तो बात ही क्या है !

ताराचद : ईश्वर तुम्हारा भला करे ! (हुक्के का कश लगा कर) तुम्ही कहो रानी अपने घर न जायगी तो क्या आयु भर यहाँ बैठी रहेगी ? मै उसे जो शिक्षा दिला रहा हूँ सो उसका कारण यही है कि त्रिलोक को उससे जो शिकायत है, वह दूर हो जाय, नहीं उसे नौकरी तो करनी नहीं।

शिवराम : भले घरों की बहू-बेटियाँ कहीं नौकरी करती हैं !

ताराचंद : ईश्वर तुम्हारा भला करे ! यह साला जो आज भाई बना फिरता है, कल यदि मेरी आँख बन्द हो जाय तो बात भी न पूछेगा। देखो शिवराम, इन लोगों के किये तो कुछ होगा नही। ये सब नादान छोकरे हैं। इन्हें यह समझ नहीं कि कौन सी बात करने की है और कौन सी नहीं। तुम्हें इतने सवेरे कष्ट देने का उद्देश्य यह भी था कि तुम स्वयं त्रिलोक से मिलो और किसी न किसी तरह रानी को बुलाने के लिए उसे तैयार कर लो। देखो, त्रिलोक के पिता से तुम्हारी अच्छी मित्रता रही है। उस पर भी दबाव डालो। यदि वह मेरा मकान ही लेना चाहता है तो मैं अपना पुराना मकान उस के नाम कर दूँगा। आख़िर जमाई और बेटे में भेद ही क्या है ? रानी अपने घर सुखी रहे, मैं और मकान बनवा लूँगा।

शिवराम : परन्तु रानी से उसे शिकायत क्या है ?

ताराचद : *दसियो शिकायतें है—वह सुशिक्षित नही, सुसंस्कृत नही, सुन्दर नही, विनम्र नही, मुँह-फट है, सास ससुर का आदर नही करती ..*

शिवराम : *तुमने रानी को समझाया नही ?*

ताराचंद : *अरे भाई, जब वह पिछले वर्ष रोती हुई आयी, तो मैंने समझाबुझा कर उसे वापस भेज दिया था । परन्तु वास्तव मे इसके अतिरिक्त रानी का कोई दोष नही कि वह त्रिलोक की आशा के अनुसार दहेज़ मे एक मोटर और मकान नही ले गयी ?*

शिवराम : *तुम्हें यह कैसे मालूम हुआ ? हुई थी तुम्हारे सामने इस बात की चर्चा ?*

ताराचंद : (हुक्का गुडगुडा कर) *अरे यह तो बुझ गया* (नौकर को आवाज देते है) *सन्तू, ओ सन्तू !*

रानी : (ऑगन से) *क्या बात है पिता जी ?*

ताराचंद : *यह चिल्म बुझ गयी । उससे कहना ज़रा भर कर दे जाय ।*

रानी : *वह तो अभी आया नहीं पिता जी, मै आती हूँ ।*
(रानी आती है और चिलम ले जाती है)

ताराचंद : (रानी से) *जरा तमाखू दबा कर भरना । पूरण क्या कर रहा है ?*

रानी : (जाते जाते) *बाहर चले गये हैं बाग़ीचे में ।*

ताराचद : (खाली हुक्का गुडगुड़ाते हुए) *त्रिलोक ने मुझ से तो कभी कुछ नहीं कहा । मेरे सामने तो झिझकते झिझकते उसने इन्हीं बातो का ज़िक्र किया था, किन्तु रानी ने, ससुराल में अपने प्रारम्भिक जीवन के सबन्ध में, जो कुछ बताया, उसी से मुझे ज्ञात हो गया कि वास्तव में दुखती रग कौन सी है । शुरू शुरू में त्रिलोक ने रानी को उसके पिता की कजूसी के लिए कोसा और कहा कि उसे धोखा दिया गया है । उसे आशा दिलायी गयी थी कि एक मोटर और मकान दहेज़ में दिया जायगा ।*

शिवराम : हुई थी ऐसी बात ?

ताराचद . कभी नहीं। मैं और परमानन्द त्रिलोक को देखने गये थे। इस बात का ज़िक्र तक नहीं हुआ। उस समय तो न इतनी पढी-लिखी की जरूरत थी, न सुन्दर की। मेरे सामने त्रिलोक ने साफ साफ़ कहा कि मै बहुत पढ़ी-लिखी लड़की पसन्द नहीं करता। बस भले घर की ऐसी सरल और सुशील लड़की चाहिए, जो मुझे घर का आराम दे सके। जब मैं शाम को कचहरी से थका-हारा आऊँ तो मुझे लगे कि मैं घर आ गया हूँ। मुझे ऐसी पत्नी नहीं चाहिए जो घर ही को कचहरी बना रखे— और मैंने उसे विश्वास दिलाया था कि वह रानी में ये सब गुण पायगा। अब परमानन्द ने उसे अपनी ओर से उसे कोई सब्ज़ बाग़ दिखाये हों तो मुझे खबर नहीं।

(रानी चिलम लिए हुई)

रानी : यह लीजिए चिलम पिता जी, उपले की आग रख कर लायी हूँ।

ताराचंद : (हुक्का गुड़गुड़ा कर) जीती रहो बेटी ! (शिवराम से) लो शिवराम, पियो।

[रानी चली जाती है और शिवराम बेपरवाही से हुक्के के दो कश लगा कर ताराचद की ओर कर देता है]

शिवराम : लेकिन तुम्हारी इच्छा के बिना परमानन्द ने ऐसा क्यों किया होगा !

ताराचद : कभी मेरा विचार था मोटर और मकान देने का, किन्तु भाई मुझे राजी का भी तो विवाह करना था। यदि रानी को मकान देता तो राजी को भी देता और फिर जब त्रिलोक और उसके पिता ने कहा कि हमें दहेज़ की बिलकुल परवाह नहीं, ईश्वर का दिया हमारे पास बहुत कुछ है, हमें तो बस सरल और सुशील लड़की चाहिए। तो मैंने अपना विचार बदल दिया। और फिर पूरण

का भी खयाल था। लाख आवारा हो, फिर भी मेरा लडका है।

शिवराम. हाँ, हाँ, पूरण के लिए कुछ भी न छोडना परले सिरे का अन्याय होता। पढ़ा-लिखा बे-ऐब लडका है, जिस दिन भी टिक कर बैठ गया, तुमसे दुगुना कमा लेगा।

ताराचंद: ईश्वर तुम्हारे भला करे! (चुपचाप हुक्का गुड़गुड़ाते हैं) मुझे क्या पता था कि त्रिलोक और उसके पिता ने जो कुछ कहा, वह सब ऊपर की बातें थीं। उनकी आँखें तो मोटर और मकान पर लगी थी। ज्यों ही रानी घर गयी, उसे सुनना पड़ा कि वह एक कजूस बाप की बेटी है, उसकी सास ने, उसके ससुर ने, उसकी जेठानियों और ननदों ने उसे दहेज़ की कमी के ताने दिये, त्रिलोक ने कई बार उन लड़कियों की चर्चा की जिनके पिता उसे कहीं अधिक दहेज़ देने को तैयार थे, या जो अधिक शिक्षित, अधिक सुसस्कृत या.....

(अचानक काल-बेल बजती है)

—: (अपनी बात जारी रखते हुए) अधिक सुन्दर, सुशील या विनम्र थीं।

(काल-बेल फिर बजती है)

—: (उच्च स्वर में) अरे सन्तू, देख कौन है, बैठाना बाहर बरामदे में! (शिवराम से) वह कुछ भी कहती या करती, उसे किसी न किसी लडकी या उसके सम्बन्धियों की बात सुननी पडती। यहाँ तक कि उसे इतना तग किया गया कि वह यहाँ आ गयी। तब मैने उसे समझा-बुझा कर भेज दिया। समझाया कि बेटी, पति जिस हाल में रखे, उसी में रहना चाहिए और ससुराल के दोष गिनने के बदले गुण ढूँढने चाहिएँ। और मैं जानता हूँ, रानो ने अपनी ओर से किसी तरह की शिकायत का अवसर नहीं दिया, मुझे क्या मालूम था कि ब्राह्मणों के भेस में ये लोग भेडिये है! परन्तु शिवराम, जो भी हो, लड़की का स्थान तो उसकी ससुराल ही है।

तुम जरा प्रयास कर देखो। मुझे मकान या मोटर की चिन्ता नहीं। रानो के सुख के लिए मै इनका प्रबन्ध कर दूँगा।

पूरण : (बगीचे की ओर से आता हुआ) पिता जी, राय सरदारीलाल आये हैं।

ताराचद : (घबरा कर उठते हुए) तो उन्हें ले आये होते।

पूरण : जी उन्होने कहा—मै यही बरामदे में बैठा हूँ, धूप बडी प्यारी लग रही है।

शिवराम : अच्छा भाई, तो मैं चला। त्रिलोक से आज ही मिलूँगा।

ताराचद : अरे भई चलो ज़रा धूप में बैठते हैं।

(शिवराम को साथ लिये चलते हैं।)

— : (जाते जाते पूरण से) सन्तू आये तो हुक्का बाहर भिजवा देना पूरण।

पूरण : जी बहुत अच्छा।

[चले जाते है रानी तेज तेज आती है और भाई के गले लग जाती है।]

रानी : (रुँधे हुए गले से) पूरण!

पूरण : (उसकी पीठ को थपथपाते हुए) क्यों रानो, क्या बात है?

रानी : पिता जी, मुझे फिर वहाँ भेजने की चेष्टा कर रहे हैं। तुम्हीं कहो—मैं क्या करूँगी वहाँ जाकर? क्या इस प्रकार उनके लोभ का पेट भरने से मेरा घरेलू जीवन सुखी हो सकेगा?

पूरण : तुम चिन्ता न करो रानो, तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध कोई तुम्हें वहाँ नहीं भेज सकता।

रानी : (रुँधे हुए गले से) पूरण, भैया!

पूरण : (उसकी पीठ थपथपाते हुए) मैं कहता हूँ तुम ज़रा भी न घबराओ।

रानी : पिता जी दूसरों से कुछ नहीं कहते, किन्तु अपने मन में वे

भी मुझे कम दोषी नहीं समझते (अचानक पूरण की आँखों में देखते हुये) एक बात पूछूँ ?

पूरण : कहो !

रानी : तुम भी तो दिल में कहीं मुझे ही दोषी नहीं समझते ?

पूरण : दोषी ! कभी नहीं ! मुझे तो इस बात का गर्व है कि तुमने अपने स्वाभिमान की रक्षा की ।

रानी : मैं उस दम घोटने वाले वातावरण में किस तरह रह सकती थी ? मुझे पिता जी का डर न होता तो मैं कभी की आ जाती । मुझे भय था, वे मुझे फिर उसी नरक में जाने को कहेंगे । पहली बार जब मैं आयी थी तो जानते हो, उन्होंने कितना शोर मचाया था । उस समय मेरा विचार था, वे लोग अपनी ग़लती मान जायँगे, इसलिए मैंने पिता जी से सब बातें न कहीं थी, किन्तु इस बार सब कुछ बता देने पर भी वे मुझे उसी नरक में भेजने का यत्न कर रहें हैं ।

पूरण : तुम किसी प्रकार की चिन्ता न करो । पिता जी पति को पत्नी का परमेश्वर समझते हों तो समझें, मै ऐसा नहीं समझता । मेरे समीप पति पत्नी का परमात्मा नहीं, उसका साथी है और उस साथ को निबाहने का सारा उत्तर-दायित्व पत्नी ही पर नहीं, पति पर भी है ।

[पडित ताराचद और राय सरदारीलाल बातें करते हुए प्रवेश करते हैं]

ताराचद अजीब मौसम है यह भी सरदारी लाल, धूप में बैठो तो गर्मी लगती है और छाया में बैठो तो ठडक (हँसते हैं) अभी दो मिनट पहले धूप कितनी प्यारी लग रही थी, किन्तु इतने ही में सिर चकराने लगा (पूरण से) ज़रा सन्तू को भेजो पूरण, हुक्का ताजा कर जाय । और देखो बाहर कोई तुम से मिलने आया है ।

पूरण : जी !

(जाता है । रानी भी जाने लगती है ।)

ताराचंद : रानो बेटा, तुम्हारे चाचा आये हैं ।

रानी (मुड कर) *चाचा जी प्रणाम !*

सरदारीलाल : (बैठते हुए) *जीती रहो बेटी ! सोहागवती बनो और अपने घर सुखी रहो !*

(रानी लजाती हुई चली जाती है)

ताराचंद : (बैठते हुए) *तुमने देखा सरदारीलाल, रानो कितनी दुबली हो गयी है। पहले से आधी भी नहीं रही। तुम एक बार प्रयास तो कर देखो। मै कहता हूँ यह जब तक यहाँ है, मैं कोई काम नहीं कर सकता।*

सरदारीलाल : *मैंने तुम से कह दिया, मैं पूरा जतन करूँगा।*

(सन्तू आता है और हुक्का उठा कर ले जाता है)

ताराचंद : *ईश्वर तुम्हारा भला करे ! रानी जैसी मेरी बेटी है सरदारी लाल, वैसी ही तुम्हारी है। मैं तो सच, पछता रहा हूँ वहाँ इसका विवाह करके, पर जो हो चुका, हो चुका। मैं नहीं चाहता कि बात अब और बढ़े। किसी ने कहा है—आँख ओझल, पहाड़ ओझल—दूर रहे तो दूर हो जायँगे। मैं जानता हूँ, त्रिलोक रानी को पसन्द करता है। विवाह से पहले उसने उसे देख भी लिया था। उसे जिस बात की शिकायत है वह मैं दूर कर दूँगा। मेरी बस यही इच्छा है कि वह उसे आदर-सम्मान से रखे।*

(राज उदास उदास आती है)

राज : [अपनी उदासी को छिपाते और हँसने की चेष्टा करते हुए) *पिता जी प्रणाम ! चाचा जी प्रणाम !*

ताराचद : *अरे राजी !* (उठ कर प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए) *कहो बेटी, प्रसन्न तो हो ?*

सरदारीलाल : *अच्छा भाई, मैं अब चलता हूँ।*

ताराचंद : *अरे भाई ठहरो। मैं भी चलता हूँ तुम्हारे साथ ! कम से कम दरवाज़े तक तो पहुँचा आऊँ।*

सरदारीलाल : (उठते हैं) *यह शिष्टाचार रहने दो।*

ताराचंद : तुमने राजी के प्रणाम का उत्तर ही नही दिया सरदारी लाल !

सरदारी लाल : (मुड कर) जीती रहो, जीती रहो बेटी ?

ताराचंद : (उठते हुए और राजी के कन्धे पर हाथ रखे उसे भी साथ साथ ले जाते हुए) राजी !

राज : जी पिता जी !

ताराचंद : यह तुम इतनी दुबली क्यों हो गयी हो ?

राज : (दुख को दबाते और मुस्कराने की चेष्टा करते हुए) जी नहीं, मै तो पहले से मोटी हो गयी हूँ ।

ताराचद : (चलते चलते क्षण भर रुक कर) तुम्हारा सामान कहाँ है ?

राज ट्रङ्क है, सो बाहर बरामदे में पडा है ।

ताराचंद : मदन नही आया ?

राज . नहीं, मैं अपने देवर के साथ आयी हूँ ।

ताराचद : तो कहाँ है वह, साथ क्यों नहीं लायी ?

राज : जी उसे जल्दी थी । मुझे यहाँ छोड़ कर स्कूल चला गया है । जीजी कहाँ है ?

ताराचद : यहीं थी, शायद उधर आँगन में हो !

राज . और भैय्या ?

ताराचंद : वह भी उधर बागीचे में होगा (उसकी पीठ को थपथपाते हुए) और तो सब प्रसन्न हैं, तुम्हारे सास ससुर·····

राज : (चलते चलते शरमा कर) जी !

ताराचंद : (उसे छोड कर सरदारी लाल के कन्धे पर हाथ रख कर चलते हुए) बडे भले लोग है सरदारीलाल । सीधे-साधे, भोले-भाले आदमी है राजी के ससुर—नेक ख़याल और धर्म-परायण ! घमंड तो उन्हें छू तक नहीं गया । जब मैं पहले-पहल राजी के लिए उनसे मिला तो कहने लगे (रुक कर) हमें लेन-देन में विश्वास नहीं पडित जी । हम तो आप को चाहते हैं । आप हमारे हो गये तो और क्या चाहिए (फिर चल पडते हैं) मैं तो ऐसे ही लोगों को पसन्द करता

हूँ। और भाई मैंने निश्चय कर लिया है कि त्रिलोक के नाम हो या न हो, किन्तु मदन के नाम एक मकान अवश्य कर दूँगा। लडका तो बेचारा गाय है।

(चबूतरे के दरवाजे से निकल जाते हैं)

राज : (अपने पिता की अन्तिम बात सुन कर रुकती है, मुड कर जाते हुए अपने पिता को देखती है। ओंठों पर तिक्त व्यंगमयी मुस्कान फैल जाती है) बेचारा गाय !

[धम्म से वहीं आँगन के दरवाजे के पास कौच में धँस जाती है। सन्तू हुक्का ताजा करके लाता है]

सन्तू : अरे राज है ! कहो बेटी कब आयी ?

राज : अभी आ रही हूँ सन्तू।

(बाग के दरवाजे से पूरण भागा आता है)

पूरण : हैलो राजी !

राज : भैय्या.....

(पूरण के गले मे लिपट जाती है।)

पूरण : पास से निकल गयी और मुझे देखा तक नहीं (जब उसके मुँह को देखता है तो चौंकता है) अरे तुम तो पीली हो गयी हो। हल्दी खाती रही हो या (हँस कर) जीजा जी ने.....

राज . (पीडा-मिश्रित-क्रोध से) भैय्या !

पूरण : अच्छा, अच्छा भई, (पीठ थपथपाता है) नाराज़ क्यों होती हो जीजा जी का नाम सुन कर ! हमारी लाल गोरी बहिन को लेके हल्दी सी पीली कर दिया और हम इतना भी न कहें कि .....

राज . भैय्या ! तुम कभी न मानोगे !

पूरण अच्छा भाई, बिगड़ती क्यों हो ? (रानी को आवाज देता है) रानी, देखो राजी आयी है (सन्तू से, जो हुक्का रख कर जा रहा है) सन्तू, जरा रानो को भेज और राज का ट्रंक उठा

को भेज और राज का ट्रक उठा कर भीतर रख, बाहर बरामदे में पड़ा है।

सन्तू : (जाते जाते) *जी बहुत अच्छा !*

(आँगन के दरवाजे से रानी भागी आती है)

रानी : (राज से गले मिलते हुए) *अरे तू इधर बैठक मे क्या गोबर-गणेश बनी बैठी है, उधर क्यों नहीं चली आयी ?*

राज : *पिता जी और चाचा सरदारी लाल बैठे थे इसलिए।*

(काल-बेल बज उठती है)

पूरण : (असतोष से) *यह इतवार का दिन तो एक मुसीबत बन गया है। सुबह से जो यह जो काल-बेल बजनी शुरू होती है तो.....*

[काल-बेल फिर बजती है और पूरण 'जी आया' कहता हुआ भाग जाता है।]

राज : (रानी के गले से चिमटती हुई रुंधे हुए गले से) *जीजी !*

[रानी उसकी पीठ थपथपाती है। राज धीरे धीरे रोने लगती है।]

रानी : *अरे !.....बात क्या है ?.....राजो !.....क्यों ?*

राज : (और भी चिमटते हुए) *जीजी !*

(और भी जोर से सिसकने लगती है)

रानी : *क्यों राजो क्या बात है ?*

राज : (आँसू पोंछते हुए तनिक सम्हल कर) *बात क्या होगी, योंही तुम्हें देखकर मन भर आया। कहो त्रिलोक जीजा जी आये ?*

रानी : (व्यग्य से हँस कर) *आ गये ! तुम अपनी कहो, तुम्हें क्या दुख है ?*

राज : *नहीं जीजी, मै हर तरह से सुखी हूँ।*

रानी : (तनिक हँस कर) *सुख की कोई झलक तो तुम्हारे मुख पर*

दिखायी नहीं देती। देखो राजो, मुझ से न छिपाओ, मैं सब भुगत चुकी हूँ।

राज : कुछ भी तो नहीं जीजी!

रानी : क्या तुम यह सब मेरी ओर देख कर कह सकती हो?

राज : (मुस्कराने की चेष्टा करते हुए) क्यों?

रानी : मुस्कान में पीडा को छिपाने की चेष्टा न करो राजो, तुम्हारी आँखें तो डबडबा रही है।

राज : (भरे हुए गले से) जीजी!

(सहसा रानी के गले से चिमट जाती है।)

रानी : (उसकी पीठ थपथपाते हुए, दीर्घ निश्वास भर कर) ससार भर में ब्याह स्त्री के लिए सुख शान्ति का सन्देश लाता है, किन्तु हमारी गुलामी के बन्धन इसके बाद और भी सुदृढ़ हो जाते हैं (राज सिसकती है) बस बस, दुख को दिल मे न छिपाओ बहिन, घाव कर देता है, और कुछ समय बाद वही घाव नासूर बन जाता हे। क्या सास तंग करती है?

राज : नहीं, वे बेचारी तो कभी कुछ नहीं कहतीं।

रानी : ससुर?

राज : वे तो देवता हैं!

रानी : ननदें?

राज : वे न होतीं ती अब तक मै शायद खत्म हो चुकी होती।

रानी : तो फिर.... .तो फिर..... तुम्हारे..... .

(राज बहिन के गले से चिमट कर सिसकने लगती है।)

—: परन्तु प्रोफ़ेसर मदन तो पढे-लिखे आदमी हैं। क्या बात है, कह डालो।

(राज चुपचाप सिसके जाती है)

रानी मुझसे न कहोगी तो और किससे कहोगी..... (राज सिसके

जाती है). कुछ कहो भी। प्रोफ़ेसर साहब तो बड़े हँस-मुख और रसीले आदमी है।

(उसे फिर कौच पर बैठा देती है।)

राज : (आंसू पोंछते हुए, धीरे धीरे) सुनती हूँ बड़े हँस मुख थे। ठहाके मारते थे तो मकान गूँज उठता था, किन्तु मैंने उनका ठहाका कभी नहीं सुना। मुस्कराते है, किन्तु उस मुस्कान में उल्लास का तो कहीं ढूँढ़ने पर भी पता नहीं चलता।

रानी : लेकिन वे तो.....विवाह में तो.....

राज : एक दिन मैंने पूछा—'सुनती हूँ आप खूब हँसते थे, ठहाके मारते थे, मैंने तो एक भी नहीं सुना!'—तब ठहाका मार कर हँस दिये—खाली, खोखला, नीरस ठहाका!

रानी : (समझने की चेष्टा करती हुई) हूँ!

(स्वयं भी कौच के बाजू पर बैठ जाती है।)

राज : यदि कहीं हँस भी रहे होते और मै चली जाती तो उनकी हँसी तत्काल बन्द हो जाती। काले काले से मेघ उनके मुख पर घिर आते। फिर यदि वे मुस्कराते भी तो उनकी मुस्कान कहीं योजनों दूर से आने वाली अपरिचित परदेशिनी सी दिखायी देती।

रानी : उन्होने तुम्हें पसन्द नहीं किया।

राज : सुनती हूँ किसी बहुत पढ़ी-लिखी लड़की से विवाह करना चाहते थे, किन्तु एक तो उस लड़की के माता पिता न थे, दूसरे वह ब्राह्मण न थी, इसलिए इनके माता पिता तैयार न हुए। इन्होंने बहुतेरा समझाया, किन्तु माँ ने उन सब कष्टों का वास्ता दिलाया जो इन्हें पाल-पोस कर बड़ा करने में उसने सहे थे और पिता ने उन मनीआर्डरों की रसीदों का ढेर उनके सामने लगा दिया जो उनकी शिक्षा के निमित्त वे प्रति मास भेजते रहे थे। बारह हज़ार की रसीदें थीं और वे चाहते थे कि उनका लड़का उनकी इच्छानुसार विवाह करे।

रानी : और लोग माता पिता के स्नेह के गीत गाते हैं।

[उठकर कमरे का एक चक्कर लगाती है
और फिर उसके पास आकर बैठ जाती है।]

तो उन्होंने तुम्हे पन्सद नही किया।

राज : मै क्या जानूँ जीजी ? ऐसा लगता है जैसे वे उस लडकी को भुला नहीं सके।

रानी : तुम उनका मन बहलाने की चेष्टा करतीं।

राज : मैंने लाख चेष्टा की, पर असफल रही उनके पास जाती तो ऐसे बैठे रहते जैसे मुझ से कोसों दूर हों। बातें करते तो मालूम होता, जैसे मुझ से नहीं, शून्य से बातें कर रहे हैं। लेटते तो लगता जैसे बर्फ़ के पानी में नहा कर लेटे हैं।

रानी : (केवल दीर्घ निश्वास लेती है) हूँ……हूँ……

(उठकर कमरे में घूमने लगती है)

राज : हाँ, जब मैं रोती तो मुझे बाहों में भर कर प्यार करने लगते। कहते—तुम अभागी हो राज, मैं भी अभगा हूँ और दर्शनों भी।

रानी : दर्शनों कौन ?

राज : वही लड़की जिससे वे शादी करना चाहते थे। पूरा नाम सुदर्शन है। एम० ए० है, उसने अभी उनका पीछा नहीं छोड़ा।

रानी : अजीब बेशरम लडकी है !

राज : कभी जब मैं कहती—आप जिसे चाहें शौक से प्यार करें पर मुझे भी न ठुकराएँ, तो मुझे बाहों में भीच लेते, किन्तु स्पष्ट अनुभव होता जैसे मन से नहीं केवल मेरे रोने से विवश होकर प्यार करते हैं। और कभी इस तरह प्यार करते करते अपने बाल नोचने लगते। कहते—मै कायर हूँ, कायर ! मातापिता के भय से मैंने अपना और तुम्हारा जीवन नष्ट कर दिया। और फिर रोने लगते, उस समय जीजी, न जाने मेरे जी को क्या होने लगता,

मै उन्हे बाहों में भर लेती, किन्तु मेरे स्पर्श मे जैसे सहस्रो बिच्छुओ के डक हो, वे हडबडा कर उठ बैठते। मुझे परे हटा देते। पागलो की भाँति चिल्ला उठते—तुम मुझसे क्यों चिमटती हो राज ? तुम्हे मुझको छोड कर चले जाना चाहिए, तुम्हें मेरा कोई काम न करना चाहिए। (दीर्घ निश्वास लेती है) किन्तु जीजी, न जाने क्यो, जितना वे मुझसे भागने की चेष्टा करते, उतना ही है मै उनके समीप रहना चाहती।

रानी : (थकी सी आकर उसके पास कौच पर बैठ जाती है) तो अब वे तुम्हारे पास नहीं आते।

राज : नही एक सप्ताह पहले तक निरन्तर आते थे, किन्तु जब भी आते ऐसा लगता जैसे बँधे-बँधे आये है ....

रानी : (सिर्फ लम्बी सास लेती है) हूँ · ···

राज : (अपनी बात जारी रखते हुए) एक दिन कहते थे—क्यों न हम अभी कुछ देर दो मित्रों की भाँति रहें ! धीरे-धीरे हम एक दूसरे को समझ जायँगे। एक दूसरे के गुणों को पहचान लेंगे। फिर हम पति-पत्नी की भाँति रहेंगे—पति-पत्नी की भाँति ऐसा जीवन बितायँगे जिसका हर नया दिन थकन और उकताहट लाने के बदले स्नेह और उल्लास लायगा।

रानी : तुम ऐसा ही कर लेतीं।

राज : मैने चेष्टा की, किन्तु तब सास जी ने कहा—तुम तो पगली हो ! वह तुमसे दूर रहना चाहता है। उस पर उस चुडैल ने जादू कर रखा है, उसका मन उड़ता रहता है, बाँध कर न रखोगी तो उड़ जायगा और उड़ा हुआ पक्षी फिर हाथ नहीं आता। मैने उन्ही का कहा माना। जैसे वे कहती रहीं मैं करती रही किन्तु इस प्रयास में जो थोड़ा-बहुत बन्धन था, वह भी टूट गया।

[रानी कुछ कहना चाहती है, किन्तु नहीं कहती। क्षण भर दोनों चुप रहती हैं। राज उठकर धीरे-धीरे कमरे में घूमने लगती है।]

—: ज्यों ज्यों मै उनके समीप जाने की चेष्टा करती, वे मुझसे दूर भागते। दोपहर को उन्होंने घर आना छोड दिया। लंच कालेज ही मँगा लेते। शाम को भी देर से आते। धीरे-धीरे यह देर बढती गयी। बहुत रात गये घर आते और चुपचाप बिस्तर पर लेट जाते। मै चाहती उनके पॉव दबा दूँ, उनके सुख दुख की बात पूछूँ, किन्तु मेरी तो शक्ल ही से जैसे उन्हे भय आता—'मुझे मत छेडो, मुझे सोने दो!' यही कहते। मै चुपचाप रोने लगती तो लपक कर उठ बैठते और घंटों आँगन में चक्कर लगा कर गुज़ार देते। कभी चिढ कर कहते—'तुम जाने किस मिट्टी की बनी हुई हो। तुम्हे स्वाभिमान छू भी नही गया। मै तुमसे इतनी घृणा करता हूँ और तुम मेरे पाँव दबाना चाहती हो'

(हताश सी तख्त पर बैठ जाती है)

रानी : (उठ खड़ी होती है) मैं हैरान हूँ, तुमने इतनी देर यह सब कैसे सहन किया! मैं तो बहुत पहले छोड़ कर चली आती।

राज : न जाने क्यों, उनकी समस्त घृणा के होते भी मुझे कभी उन पर क्रोध नहीं आया जीजी! वे जब भी मुझसे घृणा करने की चेष्टा करते, मेरे मन में सदैव दया का भाव उत्पन्न हो जाता। मैं उनके और भी समीप जाना चाहती, किन्तु जितना मै उनके निकट जाती, उतना ही वे दूर खिचते।

(गला रुँध जाता है और आँखों से आँसू बहने लगते हैं।)

रानी : (उसके पास बैठते हुए, उसके कन्धे पर प्यार का हाथ फेरते हुए) राजी!

राज : (रुँधे हुए गले से) निरन्तर रोते जागते मेरी यह दशा हो गयी (सिसकी रोक कर) घर वालों से आँख मिलाते मुझे लज्जा आने लगी। ऐसा अनुभव होने लगा मानो सब

मुझे दया की दृष्टि से देखते है, जैसे उनकी यह दया धीरे धीरे घृणा मे परिणत हो रही है।

रानी : मै कहती हूँ तुम पहले ही क्यो न चली आयी ?

राज : आशा का एक अज्ञात सा तार जो बँधा हुआ था जीजी !

[कुछ देर चुप रहती है। रानी पूर्ववत् शून्य में देखती घूमे जाती है। दाँत उसके भिचे हुए है और ज्ञात होता है, जैसे उसके मन में क्रोध का एक दुर्निवार बवडर उठ रहा है]

— परसो पता चला कि अब होस्टल ही में रहेंगे। सुपरिन्टेन्डेन्ट हो गये हैं। बस वह तार भी टूट गया। मैंने पत्र लिखकर उन्हे दो तीन मिनट के लिए बुलवाया और कहा—मेरा मन यहाँ नही लगता, मुझे मैके भिजवा दो ! कहने लगे—हाँ, तुम कुछ दिनो के लिए मैके हो आओ ! और चुपचाप उन्होंने मेरी सब चीजें ट्रक में भर दी, एक छल्ला तक सास के पास न रहने दिया। और छोटे भाई से कहा कि वह मुझे छोड़ आये। उसके बाद जैसे आये थे, वैसे चले गये। न उन्हो ने मुझसे कुछ कहा और न मै ही उनसे कुछ पूछ सकी।

रानी : सास ने रोका नहीं ?

राज : उन्होने बहुतेरा कहा। उनकी ओर देखती तो वहाँ से हिलने को जी न चाहता। मै तो उनकी सेवा में जीवन भर पड़ी रहती, किन्तु वहाँ एक वही तो नहीं, दूसरे भी है और उन सब की दृष्टि का सामना करना मेरे बस की बात नही।

(बृजनाथ और ताराचद बातें करते हुए आते है)

ताराचंद : तुम अवश्य चेष्टा कर देखो बृजनाथ। तुम उसके पिता के घनिष्ट मित्र हो। तुम्हारा वह बड़ा आदर करता है, तुम्हारी हर बात मानता है। रानो तुम्हारी भी तो बेटी है।

रानी : चलो ऑगन मे चलकर बैठें।

[दोनों चली जाती है। ताराचद आकर तख्त पर बैठते है और बृजनाथ कौच पर]

ताराचद : (हुक्का गुडगुडा कर) यह चिल्म तो बुझ गयी। सन्तू, ओ सन्तू !

सन्तू : (आँगन से) जी सरकार !

(भागा आता है)

ताराचद . यह हुक्का ताज़ा नही किया तू ने ? चिल्म तो बिल्कुल ठंडी पड़ी है !

सन्तू : मै तो ताज़ा करके रख गया था। सरकार ही चले गये थे। अभी लाता हूँ।

(चिल्म लेकर चला जाता है)

ताराचंद : (खाली हुक्का गुडगुडात हुए) जब तुम्हे सब बातो का पता है बृजनाथ तो फिर प्रयास क्यो नहीं कर देखते। मैने बृन्दाबन से कह रखा है, शिवराम, सरदारीलाल और दूसरे मित्रों से भी कह रखा है, (भेद भरे स्वर में) मे स्वयं उससे यह बात नही कर सकता। उसे जो शिकायत है, उसे दूर करने को मैं तैयार हूँ, किन्तु यदि मे स्वयं उससे पूछूँगा तो वह इस शिकायत के अस्तित्व ही से इनकार कर देगा। रानो को फिर से बसाने के लिए तुम युक्तियाँ तो दूसरी देना, किन्तु चतुराई से इस बात की ओर भी संकेत कर देना कि यदि वे दोनों अलग रहेंगे तो मैं अपना एक मकान उनके नाम कर दूँगा और कुछ समय बाद मोटर भी ले दूँगा।

बृजनाथ : हूँ।

ताराचंद : (खाली हुक्के का कश लगा कर और खाँस कर) और मुझे पूरा विश्वास है कि यदि तुम समझदारी से काम लोगे तो यह बिगडी हुई बात बन जायगी (और भी भेद भरे स्वर में) और फिर कचहरी में तुम्हारा जो प्रभाव है, उसको भी तुम काम में ला सकते हो। धमकी देना ही काफ़ी होगा।

रानो का जीवन सँवर जाएगा और मै आयु भर तुम्हारा आभार मानूँगा।

[सन्तू चिल्म लाकर हुक्के पर रखता है। ताराचंद हुक्के के लम्बे लम्बे कश खींचते हैं]

बृजनाथ : मै पूरी पूरी चेष्टा करूँगा, पर तुम्हे विश्वास है कि और कोई बात नहीं है ?

ताराचद : यों तो बीसियों हैं, परन्तु उन सब की तह में यही लोभ काम करता है। वह मानेगा नहीं, पर यदि तुम ज़रा चतुराई से काम लोगे तो वह राह पर आ जायगा।

बृजनाथ : मैं आज ही उससे मिलूँगा।

तराचंद : मुझे रानो के विवाह में बडा कटु अनुभव हुआ बृजनाथ। अच्छे अच्छे योग्य और बुद्धिमान लड़के मेरी आँखों के सामने आये, किन्तु मै इसी हठ पर अड़ा रहा कि लडकी अपने से बड़े परिवार में जाय। मै क्या जानता था, बाहर से बडे दिखायी देने वाले भीतर से खोखले होते हैं।

बृजनाथ : मै तो सदा ही से इस बात के पक्ष में हूँ कि परिवार की अपेक्षा लड़का देखा जाय ?

ताराचंद : (एक लम्बा कश लगा कर) राजी के लिए मैंने लड़का ही देखा है। मदन के पिता अत्यन्त निर्धन थे। अपनी आधी पेन्शन पेशगी लेकर उन्होंने मदन को शिक्षा दिलायी और उनका सारा परिश्रम और त्याग सफल हुआ। एम० ए० करते ही उसे कालेज में नौकरी मिल गई। अब वह पी० एच० डी० की तैयारी कर रहा है। इतना समझदार, हँसमुख और भला लड़का है कि पल भर जो उससे बातें करता है, उसके गुण गाने लगता है।

बृजनाथ : मुझे यह सुनकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि राज इतने अच्छे घर ब्याही गयी।

ताराचंद : मदन तो गाय है गाय ! राज तो वहाँ सचमुच राज करेगी !!

[प्रसन्नता से हुक्का गुडगुडाने लगते है । शिवराम घबराया हुआ प्रवेश करता है ।]

शिवराम : *ताराचद, तुमने सुना, तुम्हारा जमाई दूसरा विवाह कर रहा है ।*

[हुक्के की नली ताराचद के हाथ से छूट जाती है और वे उठने का प्रयास करते है]

ताराचद : (आधे बैठे, आधे उठे हुए) *कौन ? त्रिलोक !*

शिवराम : *नहीं, मदन !*

[ताराचद फिर धम्म से तख्त पर बैठ जाते है । ऑगन से किसी के गिरने और रानी के चीखने की आवाज आती है ।]

रानी : *पिता जी . पिता जी.....*

ताराचंद . *मैं कहता हूँ तुम बैठ क्या गये हो ताराचंद, यदि कुछ करना चाहते हो तो अभी कार लेकर चलो । खाईवालो की धर्मशाला में हो रही है शादी । मुझे तो विष्णु पंडित से पता चला । उसका वह सिर फिरा लड़का गया है ब्याह पढाने ।*

ताराचंद : (तत्काल उठकर) *सन्तू.....सन्तू !*

(सन्तू भागा आता हैं ।)

रानी : (ऑगन से) *पिता जी.....पिता जी.....*

ताराचंद : *कार ले जाओ और फैक्टरी से बिजली पहलवान और कुछ दूसरे मज़दूरों को लेकर खाईवालों की धर्मशाला में पहुँचो । मै तुम्हारी कार में चलता हूँ शिवराम ।*

शिवराम : *मै तो पैदल ही भागा आया हूँ ।*

बृजनाथ : *चलिए, मैं आपको अपनी कार में ले चलता हूँ ।*

ताराचंद : *क्या यह शादी मदन के पिता की इच्छ . .. ...*

शिवराम : *चलो, चलो, मै सब बताता हूँ ।*

(सब जल्दी जल्दी निकल जाते है)

रानी . (आँगन से) *पिता जी..... पिता जी..... सन्तू . ..... पूरण. !*

(वाटिका की ओर से पूरण भागा आता है ।)

पूरण *क्या बात है ? क्या बात है ?*

(भीतर भाग जाता है ।)

रानी : (आँगन से) *राजी बेसुध हो गयी है । देखो तो इसके दाँत पच्ची हो गये है ।*

[दूसरे क्षण पूरण और रानी अचेत राजी को उठाये हुए आते है ।]

पूरण : *क्या बात हुई ?*

रानी : *बस खड़े खडे गिर पड़ी ।*

(उसे तख्त पर लिटा देते है ।)

पूरण : *घबराओ मत, लपक कर थोड़ा सा पानी ले आओ ।*

(रानी जाती है ।)

—: *एक चमचा भी लेती आना,* (राज को हिलाते हुए) *राजी..... राजी.....*

(राज बेसुध है)

— : *राजी. ...राजी.. ....*

[उठकर बिजली का पखा चला देता है ।
रानी पानी लाती है ।]

रानी : *अरे, तुमने पखा छोड दिया ! यहाँ तो पहले ही ठंड है ।*

पूरण : *तुम चिन्ता न करो । पानी लाओ, इसके मुँह पर छींटे दूँ ।*

[रानी पानी देती है । पूरण राज के मुख पर छींटे मारता है]

—: *राजी . ...राजी... ....*

(राज पूर्ववत बिसुध है ।)

— : (फिर छींटे मारता है) *राजी. ....राजी.....*

(राज हिलती नहीं, बिसुध पडी रहती है ।)

पूरण : *ज़रा चमच दो ।*

रानी : *मै भूल गयी, अभी लायी ।*

(भाग जाती है ।)

पूरण : (उसके बालों पर हाथ फेरते हुए) *राज.....राजी... ..और कहती थी मै बड़ी प्रसन्न हूँ ससुराल में,*

(रानी चमच ले आती है ।)

रानी : *यह लो चमच ।*

पूरण : *तुम ज़रा इसकी नाक उँगलियों से दबाओ । मैं पानी का चमच मुँह में डालता हूँ ।*

(रानी राज की नाक दबाती है ।

— : (चमच भर कर मुँह में डालते हुए) *यह हिस्टीरिया का दौरा है या कुछ और । पहले तो कभी इसे मूर्च्छा न आयी थी ।*

रानी : *दाँत पच्ची हैं, पानी तो बह गया सारा ।*

पूरण : *तुम चिन्ता न करो, नाक दबाये रखो ।*

[रानी बहिन की नाक दबाये रखती है । साँस के रुक जाने से राज के दाँत खुल जाते है । पूरण पानी का चमच मुँह में डालता है । कुछ क्षण बाद राज तेज-तेज साम लेती है । वह दूसरा चमच मुँह में डालता है । अचेतावस्था में गरगराहट के साथ राज पानी पी जाती है ।]

— : (प्यार से) *राजी.....राजी.....*

रानी : (प्यार मे) *राजो.....राजो.....*

[राज पूरी तरह तो होश मे नहीं आती, किन्तु पहले उसका एक हाथ हिलता है फिर उसकी आँखें खुल जाती है ।]

पूरण : (प्यार से) *राजो, क्या बात थी ? चक्कर आ गया था ?*

[राज उठना चाहती है । पूरण बाँह के सहारे से उसे उठाकर बैठा देता है ।]

— : *कामरेड बिहारी आ गये, मै उनके साथ बातों में उलझ गया । बात क्या है ? इतनी दुबली हो रही हो तुम । कभी शीशे में अपना मुँह नहीं देखा ? खाने को नहीं देते रहे जीजा जी तुम्हें ?*

रानी : *तुम्हारे जीजा जी दूसरी शादी कर रहे हैं ।*

पूरण : *क्या . .....कौन ?*

रानी : *मदन !*

पूरण : *मदन !*

[चौंक कर उठ खडा होता है, सहारा हट जाने से राज फिर लेट जाती है ।]

रानी : *अभी चचा शिवराम ने बताया । लाईबालों की धर्मशाला में हो रही है शादी । पिता जी, चचा शिवराम और बृजनाथ के साथ वही गये हैं ।*

(पूरण कौच में धँस जाता है ।)

पूरण : (थके और उदास स्वर में) *मैने पहले ही कहा था । उड़ती उडती ख़बर सुनी थी कि प्रोफेसर मदन दूसरी जगह शादी करना चाहते है ।*

रानी : *एम० ए० पास लडकी है, जिसके न माता है न पिता ।*

पूरण : *शादी के लिए न माता की आवश्यकता है न पिता की ।*

रानी : *जाति से भी वह क्षत्री है ।*

पूरण : *जाति का भी ब्याह से कोई सम्बन्ध नहीं । इसके लिए तो केवल संगी हमदर्द और हम-ख़याल होना चाहिए, जिसे हम*

पसन्द कर सके, जिसके विचारो को हम पसन्द कर सकें। और मैंने पिता जी से कहा था कि आप मदन के पिता से बात करने के बदले मदन से बात कीजिए, उसके विचारों को जानिए—आपने अपनी ओर से पढा-लिखा, भला, कमाऊ लडका ढूढ लिया, यह भी देखा उसकी क्या आवश्यकताएँ है ? किन्तु पिता जी मुझे तो सिर फिरा और आवारागर्द समझते है। कहने लगे—'मै लडके के पिता से मिला हूँ, बडे सज्जन है। अहकार उनमें नाम को भी नहीं है। भेंट हुई तो कहने लगे—'मैं तो आप को पाकर धन्य हो जाऊँगा।' मैंने कहा—'आपने उनकी आवश्यकताएँ जान लीं उनके लड़के की आवश्यकताएँ भी तो जानिए। वह भी आपकी लड़की को पाकर धन्य होगा या नहीं।'

राज : (दुर्बल स्वर में) क्या मैं उनकी हमदर्द नहीं ? मुझसे बढ कर उनका हमदर्द कौन होगा !

पूरण : किन्तु शायद तुम उनकी हम ख़याल नहीं। वे प्रोफ़ेसर हैं और वह एम० ए०। दोनों एक दूसरे के विचारों को, एक दूसरे के स्वभाव को एक दूसरे की आवश्यकताओं को समझते होंगे। तुम कदाचित उन्हें नहीं समझ सकतीं, और वे भी शायद तुम्हें नहीं समझ सकते। मैंने पिता जी से यही कहा था—'आपने राजी को उच्च शिक्षा नहीं दी और उसके सबसे बड़े गुण ये हैं कि वह अच्छा खाना पका सकती है, अच्छे कपडे सी सकती है, कई नमूनों के स्वेटर बुन सकती है, मेज़पोश और पलंगपोश काढ़ सकती है, और घर का काम बड़ी कुशलता और मितव्ययता से चला सकती है। कहीं ऐसा न हो कि उसके यही गुण वहाँ जाकर अवगुण बन जायँ, किन्तु उन्होंने मुझे डाँट दिया। कहने लगे—'तुम्हें पढ़ा कर मै बडा सुखी हो गया हूँ जो अब लड़कियों को पढ़ाऊँगा।' मैंने कहा—'तब इसका ब्याह इतने पढे लिखे, से न कीजिए।' कहने लगे—'तू मेरा पुत्र है या पिता !' (कटु व्यग्य से) जैसे उनके पिता होने से मेरी बात ग़लत हो गयी।

रानी : मै पूछती हूँ पिता जी तो इतने पढे लिखे नही, प्रोफेसर मदन तो काफी पढे लिखे हैं। जब वे एक लडकी को चाहते थे तो उन्होंने क्यो की यहाँ शादी।

पूरण : (कन्धे झटका कर) कह नहीं सकता किन्तु शायद ..

राज : (दुर्बल स्वर में) मै जानती हूँ—माता पिता के उपकारो से उऋण होने के लिए।

रानी . (व्यग्य से) तो फिर उन उपकारो को इतनी जल्दी क्यो भूल गये ?

राज : मैने भी एक दिन यही पूछा था। कहने लगे—'मेरे लिए ब्याह करना आत्म-हत्या के समान था। मैं सोचता था, मै अपने भावों का गला घोट दूँगा, अपने भूत के लिए मर जाऊँगा किन्तु मै मर नही सका और जी भी नही सका। मै अपाहिज हो गया हूँ। तुम उस मनुष्य की कल्पना करो जो आत्म-हत्या करने की चेष्टा में अपाहिज हो जाय।'

रानी : तो अब दूसरा विवाह करके वे जी जायँगे !

राज . वे सोचते हैं कि शायद वे अपाहिज न रहेंगे।

रानी . इतनी सजधज से आये थे आत्म-हत्या करने।

राज : सजधज उनके सगे-सम्बन्धियों के कारण थी।

रानी : इतना हँसते थे, ठहाके मारते थे।

राज : वह सब तो दिखावा था, दिल तो वे पीछे ही छोड आये थे।

रानी : किन्तु तुम्हारे लिए उन्होंने क्या सोचा ? तुम्हारा भी तो उन पर कुछ अधिकार है, तुम उनकी ब्याहता पत्नी हो।

राज : एक दिन सास के कहने पर मै उनके पास गयी थी। उदास थके थके से वे बिस्तर पर लेटे हुए थे। मैने हँस कर कहा—'दर्शनो की बात सोच रहे हो ?' एक उदास सी मुस्कान उनके ओंठों पर फैल गयी। मैने कहा—'मेरा भी

अधिकार है, मैं आपकी परिणीता हूँ। इतने बारातियों के सामने, यज्ञ की अग्नि को साक्षी करके आप मुझे ब्याह लाये है।' कहने लगे—'तुम्हारे अधिकार की नींव केवल एक बाह्य प्रथा पर स्थित है, हृदय से उसका कोई सम्बन्ध नही। सुदर्शन का अधिकार मेरे हृदय से सम्बन्ध रखता है। बारातियो ने, पडित-पुरोहितो ने, हमारे माता पिता ने, यज्ञ की अग्नि ने हमे एक दूसरे के शरीर सौप दिये है, हृदय तो नहीं सौपे।'

पूरण : यही मै कहा करती हूँ—न जाने कितनी पत्नियाँ मन ही मन अपने संगियों से घृणा करते हुए भी प्रकट उन पर अपना सर्वस्व निछावर कर देती हैं। और न जाने कितने पति अपनी पत्नियों से तीव्र-घृणा करने के बावजूद उनसे निबाहे चले जाते हैं।

राज . कहते थे—'मेरे मन पर सुदर्शन का अधिकार था। मैने सोचा था, उसे वहाँ से हटा कर तुम्हें बैठा लूँगा, किन्तु मै सफल नहीं हो सका।'

रानी : कैसी निर्लज्ज लड़की है यह दर्शनो! जब उन्होने उसका इतना अपमान करके तुमसे विवाह कर लिया तो वह किस प्रकार उनका पीछा पकड़े हुए है? मैं जीवन भर ऐसे व्यक्ति का मुँह न देखती।

राज : शायद वह अब भी उनसे प्रेम करती है।

रानी : मै लाख प्रेम करती, पर उस अपमान के बाद अपने स्वाभिमान को छोड़ कर उनके पीछे यों मारी मारी न फिरती।

(क्षणभर के लिए सब मौन रहते हैं।)

रानी : पर आखिर तू करेगी क्या?

राज : जो ईश्वर चाहेगा।

रानी : ईश्वर यही चाहता है कि पुरुष स्त्रियों पर निरन्तर अत्याचार करें। मुरझाये हुए फूल अथवा सड़े हुए फल की भाँति उठाकर फेंक दें। ईश्वर!.....

(बरामदे से पडित ताराचद की आवाज़ आती है ।)

ताराचद : *ये सब कहने की बातें है बृजनाथ। इस तरह आसानी से मैं उसे नहीं छोड़ सकता। मै राजी को इसी समय वहाँ भेज दूँगा। उसने समझा कि शायद वह इस प्रकार बचकर निकल जायगा। उसे राजी को घर में बसाना होगा।*

(प्रवेश करते हैं ।)

— : *अरे, राजो क्यो इस तरह पडी है ? तबीयत तो ठीक है इसकी !*

रानी : *इसे मूर्च्छा आ गयी थी।*

ताराचद : *इस दशा में मूर्च्छा न आती तो और क्या होता* (नौकर को पुकारते है) *सन्तू, सन्तू*

सन्तू : (बाहर के दरवाज़े से आता हुआ) *जी सरकार !*

ताराचंद : *भाग कर बाज़ार से चार छः आने का गाजर का मुरब्बा और कुछ चाँदी के वरक ले आ। यह बहुत दुर्बल दिखायी दे रही है ।*

(सन्तू 'जी सरकार' कहता हुआ भाग जाता है)

— : (राज के सिर पर प्यार का हाथ फेरते हुए) *तू किसी प्रकार की चिन्ता न कर बेटी। वह उस चुड़ैल के फदे में फँस गया है। उस वेश्या ने.....*

पूरण : *एक भली लडकी को वेश्या कहते हुए आपको संकोच नहीं होता।*

ताराचद : *चुप रहो। वह वेश्या नहीं तो और क्या है। जो लड़की एक विवाहित पुरुष के साथ नंगे सिर, नंगे मुँह, बारीक कपड़े पहने, ओंठ, मुँह रँगे आवारा घूमती है जिसे न अपना ध्यान है न भले घराने की दूसरी लडकी का, वह वेश्या नहीं तो और क्या है ? मैं कहता हूँ वेश्याओ में भी इतनी लाज-शरम होती होगी। क्यों*

बृजनाथ ? वह उस वेश्या के चक्कर में फँस गया है, पर जल्दी ही उकता जायगा, यह मै लिखे देता हूँ ।

बृजनाथ . यह तो एक बाहरी आकर्षण है ताराचद, चार ही दिन मे उतर जायगा ।

ताराचंद : ईश्वर तुम्हारा भला करे ! उसकी तो सारी पगार* इसकी एक साडी पर खर्च हो जायगी ।

पूरण आखिर आप क्या फ़ैसला कर आये ?

ताराचद : मै मार कर भगा देता सबको पर विवाह हो चुका था । एक भी भाँवर कम रह जाती तो मै रुकवा देता शादी । बिजली पहलवान भुरकस बना कर रख देता सबका, किन्तु राजी का ध्यान आ गया ।

रानी आपने मदन से पूछा नहीं कि यदि तुम्हे इसी लड़की से विवाह करना था तो किसी दूसरी भली लडकी का जीवन क्यो नष्ट किया ।

ताराचद : पूछा नहीं—मेरे प्रश्नों के मारे नाक मे दम आ गया प्रोफ़ेसर साहब का । बात तक न मुँह से निकली । मैं चाहता तो साथियो सहित उन सबके होश ठिकाने कर देता, किन्तु पडित उदय शंकर वहाँ पहुँच गये । अपने इस लड़के के करतूत का उन्हें भी उसी समय पता चला था । पगड़ी उतार कर उन्होंने मेरे पैरों पर रख दी और कहने लगे—'लड़के से ग़लती हो गयी है । आप चिन्ता न करें, हमारी बेटी को किसी प्रकार का कष्ट न होने पायगा । कुछ दिनों की बात है, इस लड़की का जादू उतरा कि वह उसी के चरणों में जा गिरेगा ।'

बृजनाथ : यही तो मैं कहता हूँ । जवानी के मद में लड़के कई बार ऐसी ग़लतियाँ कर बैठते हैं ।

रानी : तो क्या इस विवाह के बाद भी आप राजी को वहाँ भेजेंगे ?

बृजनाथ : नहीं तो क्या बेटा उस चुड़ैल के पैर वहाँ जमने देंगे ?

---

*पगार = वेतन ।

इस समय वह राजी को भी रखने के लिए तैयार है।

पूरण : किन्तु उन्होने राजी मे कोई दोष तो बताया होगा।

बृजनाथ : कुछ नहीं। उस पर उस लडकी का जादू सवार है। वह कहता है राजी में और मुझमे किसी प्रकार की मानसिक समता नही। मैने उसे समझाया कि मानिसक समता एक महीने मे नही हो जाती। सुदर्शन को आप एक वर्ष से जानते हैं। राजी को आप एक वर्ष दीजिए। जहाँ तक मेरा विचार है उसने यह काम अपने पिता से बदला लेने के लिए किया है।

रानी : बदला !

बृजनाथ : वह यहाँ विवाह न करना चाहता था, उन्होंने विवश किया। उसी के विरुद्ध एक प्रबल आक्रोश और प्रतिशोध का चिन्ह है यह शादी।

पूरण : किन्तु इस घरेलू झगडे मे एक दूसरी निर्दोष लड़की का जीवन नष्ट करने का उन्हें क्या अधिकार है।

रानी : और इस अपमान के बाद राजी ही क्यों वहाँ जाय ?

बृजनाथ : राजी का वह घर है। उस पर उसका अधिकार है। यदि पति एक भूल करता है तो पतिव्रता-स्त्री को उसे क्षमा कर देना चाहिए।

रानी : किन्तु यदि स्त्री ऐसी ग़लती करती है तो क्या पति उसे क्षमा कर देता है ?

ताराचद : रानी !

बृजनाथ : यदि राजी इस समय चली जायगी, मान-अपमान का विचार छोड़ विवेक से काम लेगी तो वह अपने पति को इस लडकी के कुप्रभाव से बचा सकेगी (राजी से) देखो बेटी, तुम्हारे पति ने एक भूल की है। तुम दूसरी भूल न करना। उसकी गलती को क्षमा कर देना। उसे अपना लेना। उसे उसकी गलती की याद न दिलाना। उस लडकी को भी न कोसना—यह काम तुम अपने सास ससुर के लिए छोड़ देना—यदि वह उस लड़की के पास जाय

तो उसे न रोकना। यदि वह लडकी तुम्हारे पास आय तो उससे घृणा का व्यवहार न करना। यदि तुम यह सब करोगी तो अन्त में विजय तुम्हारी होगी। उस लडकी से वह कुछ ही दिनों में उकता जायगा।

पूरण : किन्तु वह लडकी अब मात्र दूसरी लड़की नहीं रही, उसकी ब्याहता पत्नी है।

रानी : क्या आप राजी को सौत पर भेजेंगे ?

बृजनाथ : माता कौशल्या की एक छोड़ दो सौतें थीं।

पूरण : किन्तु दशरथ राजा थे। आप साधारण लोगो की बात कीजिए। और फिर कौशल्या ही कौन सी सुखी रहीं— चौदह बर्ष तक रोते रोते उनकी आँखें अन्धी हो गयीं। और कौन कह सकता है कि रामायण में सत्य कितना है और झूठ कितना ?

ताराचंद : (अत्यधिक क्रोध से) पूरण !

रानी : जिस व्यक्ति ने राजी का इतना तिरस्कार किया, बिना किसी दोष के दूसरा विवाह कर लिया, उसके पास जाने को, उसकी सेवा करने को आप कहते हैं।

बृजनाथ : भगवान शंकर की भाँति हिन्दू देवियों ने कई बार जान बूझ कर विष-पान किया है।

पूरण : किन्तु मै पूछता हूँ, विष पान क्यों आवश्यक हो ?

ताराचंद : (हुक्के की नै छोड़ कर) तो क्या तुम चाहते हो कि वह जीवन भर यहाँ बैठी जलती कुढ़ती रहे !

रानी : जले कुढ़ेगी क्यों, आप उसे पढाइए, लिखाइए अपने पाँवों पर खड़ा होना सिखाइए।

बृजनाथ : बेटा पढ़ाना लिखाना लड़की को आर्थिक रूप से स्वतन्त्र बनाने के लिए होता है, किन्तु विवाह का केवल यही पहलू तो नहीं, दूसरा भी है। यदि विवाह का मात्र आर्थिक पहलू ही होता तो राजे महराजे अपनी लड़कियों के विवाह न करते।

पूरण : राजी का दूसरा विवाह हो सकता है।

ताराचद : } पूरण!
राज : } भैय्या!

पूरण : पुरुष एक स्त्री के होते दूसरा विवाह कर सकता है तो स्त्री क्यो नही कर सकती, और विशेषकर पुरुष के ठुकरा देने पर?

बृजनाथ : कानून के अनुसार हिन्दू विवाह टूट नहीं सकता। कानून राजी को इस बात की आज्ञा न देगा।

पूरण : प्रोफ़ेसर मदन दे देंगे।

राजी : (अत्यन्त पीडा और दुख से, जैसे इस जिक्र ही से उसे कष्ट हो रहा हो) भय्या!

ताराचंद : तुम्हें शर्म नहीं आती, अब ब्राह्मणों की लड़कियाँ वेश्याएँ बनेंगीं!

पूरण : किन्तु ब्राह्मणो की लडकियाँ क्या.....

ताराचंद : (गरज कर) चुप रहो।

राजी : मै जाऊँगी पिता जी। आप अभी मुझे स्वय वहाँ जाकर छोड़ आइए।

रानी : गीली लकडी की भांति तुम्हें सुलगना पसन्द है।

राजी : मै यहाँ भी सुलगती रहूँगी जीजी।

(बृन्दाबन प्रसन्न-वदन प्रवेश करता है।)

बृन्दाबन : ताराचद बधाई हो! लो मुँह मीठा कराओ! और रानो को तैयार करदो।

ताराचद : क्या त्रिलोक से तुम मिले?

बृन्दाबन : मै कहता हूँ, मैंने इस चतुराई से बात की कि वह न केवल मान गया, बल्कि रानो को लेने आ रहा है।

ताराचंद : ईश्वर तुम्हारा भला करे बृन्दाबन, ईश्वर तुम्हारा सदैव भला करे! तुमने मेरे वंश को इस कलंक के टीके से बचा लिया। तुमने केवल रानो का जीवन ही नहीं सुधारा,

मेरी भी सबसे बड़ी चिन्ता दूर कर दी। यह बताओ यह चमत्कार हुआ कैसे ?

वृन्दावन : एक दिन अपने लडके का जिक्र करते हुए मै ने बातों में त्रिलोक से उसके विवाह और घरेलू जीवन की बात चला दी। उसके भाग्य को सराहा कि उसे रानी जैसी भले कुल की सुशील और समझदार लडकी मिली है। इस पर जल कर वह अपने वैवाहिक जीवन की असफलता का रोना रोने लगा। उसने रानी के विरुद्ध शिकायतों का एक दफ्तर खोल दिया। मैने उसे समझाया कि जहाँ परिवार इकट्ठे रहते हैं, वहाँ बहुओं के विरुद्ध ये शिकायतें आम होती है। सौ में से शायद ही एक बहू ऐसी मिले जिसके विरुद्ध ये शिकायतें न हों।

ताराचंद : ईश्वर तुम्हारा भला करे !

वृन्दाबन : (प्रशसा से खुश होकर) इस पर वह झेंपा। फिर कहने लगा—इस दशा में जब कि मैंने प्रैक्टिस अभी हाल ही ही में आरम्भ की है, मेरे लिए अलग घर बसाना कठिन है। मैंने कहा—यदि तुम अलग रहना चाहो तो तुम्हारे ससुर ही तुम्हारी सहायता कर सकते हैं। उनका पुराना मकान कचहरी रोड पर है। एक दिन वे जिक्र भी कर रहे थे कि विवाह के अवसर पर कुछ कारणों से मै उसे रानी के नाम नहीं कर पाया। यदि तुम और रानी उधर आ जाओ तो वे अत्यन्त प्रसन्न होंगे। मकान तुम दोनों को दे देंगे, और यों भी वे हर प्रकार से तुम्हारी सहायता करते रहेंगे।

ताराचंद : ईश्वर तुम्हारा भला करे !

वृन्दाबन : इस पर वह मान गया और स्वयं ही कहने लगा कि वास्तव में सौ में से अस्सी जोड़ों के असफल रहने का कारण कुटुम्बों का सम्मिलित होना है। नये घर में आकर नयी ब्याही लड़कियों को अपने व्यक्तित्व को नये सिरे से ढालने की कठिनाई से दो चार होना पड़ता है। जब वे इस चेष्टा में असफल होती हैं, तो उन्हें

प्रतिपल सास नन्दों के ताने सहने पडते है—और मै तुम्हें सच बताऊँ, कहने लगा—मै तो सचमुच रानो को मन से चाहता हूँ, किन्तु माता पिता और बहिनो के हाथो विवश हूँ।

बृजनाथ : और क्या, ये अनपढ सास ननदें जो न करें थोड़ा है !

बृन्दाबन : बस उस दिन तो इतना कह कर मै चला आया। आज मिलने गया तो पता चला कि इस बीच में बाप बेटे में तुमुल-युद्ध हो चुका है। लड़के के इस प्रस्ताव को सुन कर कि वह अपनी पत्नी को लेकर अलग हो जायगा, पिता ने उसे बेदख़ल करने की धमकी दी है। इस पर वह भी तन गया है और उसने संकल्प किया है कि वह तगी से गुजारा कर लेगा, किन्तु रानी को लेकर अलग हो जायगा। मैने उसे समझाया कि तुम्हारे ससुर तुम्हारी हर प्रकार से सहायता करेंगे। रानी शिक्षा पा रही है और तुम्हारी उपयुक्त सगिनी सिद्ध होगी। उसने कहा था, "मैं अभी रानी को लेने के लिए जाने की सोच रहा हूँ।" आज वह किसी समय भी रानी को लेने के लिए आ सकता है। लो, अब कराओ मुँह मीठा ताराचंद !

ताराचंद : (उठ कर उसे आलिंगन में कस लेते है) इस उपकार का बदला किस प्रकार चुकाऊँ भाई ! तुमने मुझे जीवन भर के लिए ख़रीद लिया। इन सफ़ेद बालों की लाज रख ली तुमने बृन्दाबन ! (पूरण से) क्यों पूरण, मैं न कहता था बृन्दाबन उसे मना लेगा। बुद्धिमान यो बिगड़ी बात बना लेते हैं, और तुम कहते थे (नकल उतार कर) मै उससे बात तक करना अपना अपमान समझता हूँ।

पूरण : मेरा अब तक यही विचार है।

ताराचंद : (मुँह चिढ़ाते हुए) मेरा अब तक यही विचार है। शरम तो नहीं आती (रानी से) चलो रानी, तैयारी करो बेटा।

रानी : आपने उन्हें मकान का लालच दिया है।

ताराचंद : लालच ! वह तो मैं तुम लोगों के नाम करने ही वाला था।

रानी : (और भी दृढता से) आपने उन्हे मकान का लालच दिया है।

ताराचद : तुम तो पागल हो। वह तो मै तुम्हारे नाम करूँगा, किन्तु बेटा स्त्री का धन उसके पति ही का होता है। तुम और त्रिलोक कोई दो थोडे ही हो।

रानी : न मै उनका घर चाहती हूँ न आपका मकान।

ताराचद : क्या ...... ? ...... ? ....!

रानी : मै वहाँ नही जाना चाहती।

ताराचंद : पागल हो गयी है।

रानो : जिस व्यक्ति के समीप चन्द हज़ार के एक मकान का मूल्य मेरे मान के कहीं अधिक है, जो मुझे नही, मकान को चाहता है, मै उस लोलुप की शक्ल तक नही देखना चाहती।

ताराचद : (क्रोध से) रानो !

बृन्दाबन : हिन्दू देवियाँ सपने में भी कभी अपने पति के विरुद्ध ऐसे शब्द नहीं कहतीं।

पूरण : चाहे वह पति कितना भी अत्याचारी क्यों न हो ?

ताराचंद : पूरण !

बृन्दाबन : तुम लोग गलत समझते हो। वह अत्याचारी नही, वह लोलुप भी नही, वह तो बेचारा गाय है। सारा दोष तो उसके माता पिता का है।

पूरण : (व्यंग्य से) बेचारा गाय !

बृन्दाबन : रानो, वह वास्तव में तुमसे प्रेम करता है। तुम्हारा आदर करता है। तुम्हारे लिए तो वह अपने माँ बाप तक को छोड़ने के लिए तैयार है।

रानी : मैंने कभी नहीं चाहा कि वे अपने माँ बाप से अलग रहे, अपने माँ बाप को छोड़ दें, किन्तु यदि इस प्रकार वे एक मकान हथिया सकें, तो इस बात का ढढोरा पीटने में भी उन्हें संकोच न होगा। आप कहते हैं, वे मुझसे प्रेम करते हैं, यदि मकान के साथ' आप उन्हें मोटर भी ले देने का वचन दें तो वे मेरी पूजा तक करने लगेंगे।

बृन्दाबन : (शर्म दिलाते हुए) *रानी बेटी !*

रानी . *मै पूछती हूँ, इस लोलुपता का पेट आप कब तक भर सकते है ? और मै ही ऐसे लालची के साथ कब तक रह सकती हूँ ?*

ताराचद : (गरज कर) *तू अपने पति से घृणा करती है ।*

रानी : (निर्भीकता से) *मेरा रोम-रोम उससे घृणा करता है ।*

ताराचंद : (सयम को खोकर) *रानो तू बके जा रही है और मै मौन तेरे मुँह की ओर तक रहा हूँ । तू नहीं जानती, अपने पति के विरुद्ध सपने मे भी बुरी बात सोचना कितना बडा पाप है । तू नहीं जानती तू ने एक ब्राह्मण के घर में जन्म लिया है, तुझे एक ब्राह्मण माँ ने पाला है, तू किसी चांडाल के घर उत्पन्न नही हुई ।*

पूरण : *जहाँ तक मनुष्यता का सम्बन्ध है, ब्राह्मण और चांडाल में कोई अन्तर नही । और फिर ब्राह्मण की लडकी का दिल चांडाल की लड़की से बड़ा नहीं होता और न वह पत्थर का होता है ।*

ताराचद : *चुप रहो पूरण और अपनी फ़िलासफ़ी अपने पास रखो ! (रानी से) तू समझती है रानो कि अपने पिता के सम्मुख तू ऐसी अधर्म की बात करेगी और वह चुपचाप सुन लेगा ।*

रानी : *आपके धर्म की बातें मैंने बहुत सुन ली । आपका धर्म भी पुरुषों का धर्म है ।*

बृन्दाबन : *मै कहता हूँ बेटी, त्रिलोक सचमुच तुम्हारा आदर करता है ।*

रानी : *मैं उस व्यक्ति को आप से अधिक जानती हूँ ।*

बृजनाथ : *तुम्हारे लाभ ही के लिए तो ये मकान तुम्हारे नाम कर रहे हैं बेटी !*

रानी : *आप यह समझते है कि ये मकान मेरे नाम करके मुझ*

पर कोई उपकार कर रहे हैं। ये मेरे गले मे सदा के लिए दासता की बेड़ी डाल रहे हैं। मुझे ऐसे व्यक्ति के साथ रहने को विवश कर रहे है जिसके लिए मेरे मन में लेश-मात्र भी सम्मान नही। ये मुझे फिर उस नरक में धकेलना चाहते है, जहाँ घुट-घुट कर मै अधमरी हो गयी हूँ। ये चाहते हैं, इनके नाम पर, इनके कुल के नाम पर कोई कलक न आये, चाहे इनकी लडकी घुट-घुट कर मर जाये।

तारांचद : (अत्यधिक क्रोध से) रानो !

रानी : (पूर्ववत बृजनाथ से) मै उस व्यक्ति के साथ एक वर्ष तक रही हूँ और जितना मैं उसे जानती हूँ, आप या चाचा जी नहीं जानते। एक मकान के लोभ में वह मुझे ले जायगा। वह मेरी प्रशसा और खुशामद भी करेगा, किन्तु क्या इतना मूल्य देने के बाद इस खरीदे हुए पति को मैं पसन्द कर सकूँगी ? उसका सम्मान कर सकूँगी ? उसे पति परमेश्वर समझ सकूँगी !

तारांचद : मालूम होता है इस निकम्मे, आवारागर्द लडके ने तेरा भी दिमाग़ खराब कर दिया है। पिता के नाते मेरा यह आदेश है कि तू अपने पति के घर जायगी।

रानी : मै इस आदेश का पालन नहीं कर सकती।

तारांचद : तू अपने पति के घर जायगी या इस घर में भी न रहेगी।

रानी : मैं इस घर को भी नमस्कार करती हूँ।

(हाथ जोडकर चलने को उद्यत होती है।)

बृन्दाबन : रानो बेटा, तू कहाँ जा रही है ? तू नहीं जानती कि तू लड़की है, तू कहाँ जायगी।

रानी : (अवरुद्ध कठ से) जहाँ सींग समायेंगे, चली जाऊँगी, किन्तु इस घर में एक पल भी न रहूँगी।

पूरण : इस बात की चिन्ता न कीजिए चाचा जी। रानो को कहीं और न जाना होगा। यह मेरे साथ जायगी। जिसे

आप लोग निकम्मा और आवारा समझ रहे है, वह अपनी सारी आवारागर्दी छोडकर तन-मन से परिश्रम करेगा, कमायेगा और अपनी बहिन को इस योग्य बनायेगा कि वह अपने पॉवों पर खडी हो सके। और अपने पिता के मकान या मोटर के बल पर नहीं, अपनी योग्यता के बल पर आदर-मान पा सके।

ताराचद : अच्छा, तो यह आग तुम्हारी लगायी हुई है। निकल जाओ, तुम दोनों मेरे घर से निकल जाओ!

राजी : (उठकर अपने पिता को समझाते हुए) पिता जी!

पूरण : चलो रानो, इन पिताओं और पतियों में कोई अन्तर नही।

बृन्दाबन } ताराचद!
बृजनाथ } पूरण!

ताराचद . (उसी क्रोध की दशा में) चले जायॅ। मेरी आँखो से दूर हो जायॅ। ऐसी सन्तान से मै निःसन्तान भला। बचपन ही से इनकी माँ मर गयी। इतनी मुसीबतों से मैने इन्हे पाला। क्या इसीलिए कि बडे होकर ये ऐसे निर्लज्ज और नाखलफ़ साबित हों?

रानी . (रुँधे हुए गले से) आप अन्याय करते है पिता जी। हम आप के उपकारो का बदला नहीं चुका सकते, किन्तु.....

ताराचद : (चीख कर) चले जाओ! मेरी आँखो से दूर हो जाओ।

राज : (रानी की ओर बढते हुए) जीजी!

रानी : (जाते जाते रुक कर) आज से हमारे मार्ग पृथक होगे राजो। मै प्रार्थना करुँगी कि तुम सुखी रहो।

पूरण : स्वाभिमानियो के लिए आदि-काल से यह मार्ग खुला है राजो।

राजो . मेरा मार्ग भी तो आदि है भैया।

पूरण : परमात्मा तुम्हारे पाँवों को छलनी होने से बचाये!
(रानी के कन्धे पर हाथ रखते हुए) चलो रानो!